श्री दसलक्षण विधान

रचयिता
मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज

प्रकाशक
श्री जैनोदय विद्या समूह

- कृति : श्री दसलक्षण विधान
- आशीर्वाद : आचार्य श्री १०८ विद्यासागरजी महाराज
- रचयिता : मुनि श्री १०८ सुव्रतसागरजी महाराज
- संयोजन : ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
- संस्करण : प्रथम, वर्षायोग २०१८
- आवृत्ति : ११००
- लागत मूल्य : २५/-
- प्राप्ति स्थान : ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
  94251-28817
- मुद्रक : विकास आफसेट, भोपाल

दसलक्षण विधान समुच्चय पूजन

स्थापना (दोहा)

धर्म हमारे प्राण है, धर्म स्वभावी शान।
सो दसलक्षण पूजने, कर लें नमोऽस्तु ध्यान॥

(हरिगीतिका)

उत्तम क्षमा है धर्म पहला, ब्रह्मचारी अंत में।
दस धर्म को करके नमोऽस्तु, स्वस्थ हो जिन पंथ में॥
हैं धर्म ही जीवन हमारे, धर्म साँचे मित्र हैं।
मन वेदिका पर कर विराजित, पूजते हम भक्त हैं॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्म अत्र अवतर अवतर...।अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्...।(पुष्पांजलिं...)

निर्वाह या निर्माण करना, कार्य है आसां यही।
निर्वाण करने को बनें हम, जन्म मृत्यु के जयी॥
दस धर्म के जल से नहाये, धर्म की वह धार हो।
सो धर्म दसलक्षण भजें हम, कर नमोऽस्तु धर्म को॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं...।

दस धर्म के आश्रय बिना तो, विश्व में बस भ्रांति है।
जो धर्म के आश्रित हुए तो, शांति ही बस शांति है॥
संसार की तप क्रांति त्यागे, धर्म की बस गंध हो।
सो धर्म दसलक्षण भजें हम, कर नमोऽस्तु धर्म को॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

भव भूल में बिन धर्म हम तो, रात दिन ही चल रहे।
जाना कहाँ आये कहाँ से, सोच कर दिन ढल रहे॥
अब व्यर्थ में भटके नहीं हम, धर्म अक्षय छाँव हो।
सो धर्म दसलक्षण भजें हम, कर नमोऽस्तु धर्म को॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्व...।

मानी भयंकर काम भोगी, तीर तीखे दागता।
पर वीतरागी धर्म मुद्रा, देख पीछे भागता॥

इस काम का आतंक हरने, धर्म का हथियार हो।
सो धर्म दसलक्षण भजें हम, कर नमोऽस्तु धर्म को॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यः कामबाण विध्वंशनाय पुष्पाणि...।

उपचार भव-भव में किये पर, यह क्षुधा मिटती नहीं।
दस धर्म की औषध बिना, कोई दवा दिखती नहीं॥
भर्ती करो निज औषधालय में हमें हम स्वास्थ्य हों।
सो धर्म दसलक्षण भजें हम, कर नमोऽस्तु धर्म को॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

मिथ्यात्व व अज्ञान तम से, सूर्य चेतन का छिपे।
दस धर्म का अध्यात्म पाके, ज्ञान का सूरज दिखे॥
दीपावली कैवल्य की हो, दुख अमावस दूर हो।
सो धर्म दसलक्षण भजें हम, कर नमोऽस्तु धर्म को॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं...।

हर घातिया सर्वज्ञ बाँकी, जब नशाये कर्म को।
तो सिद्ध पद की धूप महकी, पा लिया निज धर्म को॥
चारित्र की महके सुगंधी, हर बुराई दूर हो।
सो धर्म दसलक्षण भजें हम, कर नमोऽस्तु धर्म को॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

जो सहजता से मिले वह, कीमती कैसे हुआ।
है मोक्ष अति दुर्लभ अतः वह, कीमती सबसे हुआ॥
कर लें सहन सब मोक्ष पाने, धर्म जैसा धैर्य हो।
सो धर्म दसलक्षण भजें हम, कर नमोऽस्तु धर्म को॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

जो मूल्य जड़ का आँकते, क्या मूल्य चेतन का उन्हें।
जो मूल्य चेतन का समझते, तुच्छ जग वैभव उन्हें॥
दो अर्घ की कीमत हमें ये, ऋद्धि सिद्धि अनर्घ हो।
सो धर्म दसलक्षण भजें हम, कर नमोऽस्तु धर्म को॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जयमाला दस धर्म की, भाव भक्ति से गाएँ।
भक्ति मुक्ति दातार भज, निज अध्यात्म सजाएँ॥

जय हो! जय हो! धर्म स्वभावी, जो हरते सब भाव विभावी।
विघ्न अमंगल सबकी हरते, मंगल-मंगल जग में करते॥१॥

तरह तरह की परिभाषायें, किन्तु सभी सुख पथ दिखलायें।
जिन में दस धर्मों की धारा, नमोऽस्तु जिनको सदा हमारा॥२॥

उत्तम क्षमा धर्म जो धारें, मैत्रि भाव से सब दुख टारें।
उत्तम मार्दव की जय बोलो, मोक्ष द्वार बन विनम्र खोलो॥३॥

उत्तम-आर्जव छल को हरता, सभी समस्या हल जो करता।
उत्तम शौच धरे जो लोभी, धर संतोष बने वो योगी॥४॥

उत्तम सत्य धरे जो प्राणी, बने विघ्न हर्ता कल्याणी।
उत्तम संयम शांति प्रदाता, सिद्धों से जुड़वा दे नाता॥५॥

उत्तम तप हरता भव इच्छा, आतम शोध करा दे दीक्षा।
उत्तम त्याग दान के धारी, भव सुख मुक्तिवधू अधिकारी॥६॥

उत्तम आकिंचन्य निराला, ज्ञायक स्वभाव देने वाला।
उत्तम ब्रह्मचर्य के स्वामी, हों अरिहंत सिद्ध आगामी॥७॥

ये दसलक्षण पालनहारे, व्रत पालक के वारे न्यारे।
उत्तम विधि दस अनशन ठानो, मध्यम पाँच षटादिक् मानो॥८॥

अथवा बेला तेला चोला, अब जय-जय सुनने मन डोला।
नौ एकासन इक उपवासा, या निज शक्ति सहित तज आशा॥९॥

यूँ दस वर्ष करो व्रत पावन, यथा शक्ति फिर हो उद्यापन।
अगर नहीं उद्यापन करना, तो व्रत दुगुना फिर से करना॥१०॥

धर्म हरे संसार दुखों को, धर्म करे संसार सुखों को।
सो 'सुव्रत' बन धर्म धुरंधर, बनें दिगंबर बनें निरंबर॥

(सोरठा)

दस लक्षण है तीर, भव जल रहा अपार रे।
होना नहीं अधीर, हो निज का उद्धार रे॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

दसलक्षण स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, दसलक्षण मुनिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

उत्तम क्षमा धर्म पूजन

स्थापना (दोहा)

क्षमा धर्म आधार है, धर्म आतम शृंगार।
सो पूजें उत्तम क्षमा, कर नमोऽस्तु सत्कार॥

(शम्भु)

हे क्षमा धर्म! हे क्षमा धर्म!, हम उत्तम क्षमा धर्म भजते।
ये धर्म और धर्मात्मा जन, इक दूजे बिना टिक न सकते॥
हम क्षमा माँगकर क्षमा करें, सो आज पुकारें क्षमा क्षमा।
आह्वान पूर्व नमोऽस्तु हो फिर, ओम ह्रीं अर्हम् नमो नमः॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांग अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्...।(पुष्पांजलिं...)

इन क्रोध कषायों के जल से, बस जन्म मृत्यु की धार बहे।
जिसमें हम गोते खा खाकर, जी भी न सके मर भी न सके॥
अब क्षमा धर्म की नैया से, भवसागर का तट पाना है।
सो उत्तम क्षमा धर्म भजने, कर नमोऽस्तु शीश झुकाना है॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

इस क्रोध आग ने भव वन में, हर प्राणी को ही जला दिया।
यह दाह भयंकर सह न सके, बस क्षमा लेप ने भला किया॥

इस क्रोध दाह से बचने को, उपचार क्षमा का पाना है।
सो उत्तम क्षमा धर्म भजने, कर नमोऽस्तु शीश झुकाना है॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय संसार ताप विनाशनाय चंदनं...।

जब क्रोधी पर विश्वास नहीं, विश्वास क्रोध पर क्यों करते।
यह क्षमा अनंतकाल टिकती, विश्वास न इस पर क्यों करते॥
विश्वास क्षमा पर अक्षय हो, अब अक्षत भेंट चढ़ाना है।
सो उत्तम क्षमा धर्म भजने, कर नमोऽस्तु शीश झुकाना है॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

जब कुपित क्रोध के तीर चले, हर बाग उजड़ते आतम के।
तब धर्म हिरन कब बच सकते, जब काम शिकारी आ धमके॥
अब क्षमा पुष्प के खिला-खिला, निज ब्रह्म बाग महकाना है।
सो उत्तम क्षमा धर्म भजने, कर नमोऽस्तु शीश झुकाना है॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

स्वादिष्ट मधुर पकवान रहें, पर क्रोध जहर उनमें घोले।
जो हम सब को बीमार करे, तो मिले क्षुधा छाले फोले॥
नैवेद्य क्षमा का चखकर के, हमको दुख क्षुधा मिटाना है।
सो उत्तम क्षमा धर्म भजने, कर नमोऽस्तु शीश झुकाना है॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

हर द्वार क्रोध ने बंद किया, हर नयन मुँदे बस मुख खोला।
हर ओर हुए तांडव फिर तो, हर जीव अँधेरे में डोला॥
अब क्षमा दीप की देख किरण, हमको हर अंध मिटाना है।
सो उत्तम क्षमा धर्म भजने, कर नमोऽस्तु शीश झुकाना है॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

जब क्रोध मान का मित्र बने, तब माया झट मोहित होती।
फिर लोभ गुलामी करवाता, तो आतम कर्मों को ढोती॥
यह क्रोध त्यागकर अब हमको, कर्मों का पिंड छुड़ाना है।
सो उत्तम क्षमा धर्म भजने, कर नमोऽस्तु शीश झुकाना है॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

जब थोड़ी सी चिंगारी का, फल जलती जनम कमाई है।
तब क्रोध भयंकर ज्वाला से, किसकी दौलत बच पाई है॥
कालुष्य क्रोध का तज कर अब, पुरुषार्थ मोक्ष फल पाना है।
सो उत्तम क्षमा धर्म भजने, कर नमोऽस्तु शीश झुकाना है॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

काहे का विश्व विजेता है, जो क्रोधी बन ललकार रहे।
वो असली विश्व विजेता है, जो सबके दिल पर राज करे॥
यह क्षमा अर्घ से संभव कर, हर दिल में जगह बनाना है।
सो उत्तम क्षमा धर्म भजने, कर नमोऽस्तु शीश झुकाना है॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रत्येक अर्घ

(विष्णु)

कर्मोदय से मात्र त्वचा पा, बनते स्थावर।
हों छत्तीस तरह के पृथ्वी, -कायिक दुख सहकर॥
करके दया इन्हें हम पालें, क्षमा धरें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥१॥

ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिक जीव-रक्षणकराय उत्तमक्षमा धर्मांगाय अर्घ्यं...।

बर्फ ओस जलकायिक प्राणी, इत्यादिक सारे।
इन्हें नहाने, धोने, पीने, आदिक में मारे॥
या इनको जो कष्ट हुआ वो, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥२॥

ॐ ह्रीं जलकायिक जीव-रक्षणकराय उत्तमक्षमा धर्मांगाय अर्घ्यं...।

अंगारे ज्वालायें आदिक, अग्नि काय होते।
जलने बुझने में ये मरते, दुख पाके रोते॥
दया भाव में कमी रही वो, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥३॥

ॐ ह्रीं अग्निकायिक जीव-रक्षणकराय उत्तमक्षमा धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पंखा कूलर चलते अथवा साँसें भी लेते।

तब तो वायु कायिक दुख से, प्राण त्याग देते॥
इनका घात हुआ हो तो वो, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥४॥

ॐ ह्रीं वायुकायिक जीव-रक्षणकराय उत्तमक्षमा धर्मांगाय अर्घ्यं...।

फूल पत्तियाँ सब्जी भाजी, हरित बीज अंकुर।
छेदन-भेदन ताड़न-पीसन, सहते दुख मरकर॥
इनको जो भी हुई वेदना, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥५॥

ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिक जीव-रक्षणकराय उत्तमक्षमा धर्मांगाय अर्घ्यं...।

झल्ली कौड़ी शंख जोंक लट, दो इंद्री प्राणी।
तरह-तरह के दुख सहते हैं, कहती जिनवाणी॥
हमसे इनको जो दुख होते, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥६॥

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय जीव-रक्षणकराय उत्तमक्षमा धर्मांगाय अर्घ्यं...।

चींटी बिच्छू खटमल कुन्थु, जुंआ तिरुला लीख।
इनकी पीड़ा से बचने को, मनवा कुछ तो सीख॥
इनकी हिंसा हुई वही तो, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥७॥

ॐ ह्रीं त्रिन्द्रिय जीव-रक्षणकराय उत्तमक्षमा धर्मांगाय अर्घ्यं...।

मक्खी मच्छर तितली भोंरे, बर्र ततैयादि।
चउ इंद्री के देखो तो दुख, बनो न प्रमादी॥
इन पर करुणा करने हमको, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥८॥

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय जीव-रक्षणकराय उत्तमक्षमा धर्मांगाय अर्घ्यं...।

मन बिन कुछ कुछ तोता मैना , सर्प आदि प्राणी।
पंचेन्द्रिय पर रहे असैनी, हो ना कल्याणी॥
इन पर मैत्री भाव दिखाने, क्षमा करें आहा।

ओम् ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥९॥

ॐ ह्रीं असैनी-पंचेन्द्रिय जीव-रक्षणकराय उत्तमक्षमा धर्मांगाय अर्घ्यं...।

मन से सहित जीव सैनी जो, सुर नर नरक पशु।
कर्मोदय से सुख दुख सहते, हम क्या कहें कछु॥
इनकी पीड़ा से बचने को, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥१०॥

ॐ ह्रीं सैनी-पंचेन्द्रिय जीव-रक्षणकराय उत्तमक्षमा धर्मांगाय अर्घ्यं...।

सूक्ष्म स्थूल प्रत्येक साधारण, थावर त्रस प्राणी।
चौगति चौरासी लख योनि, इनकी जो हानि॥
हाथ जोड़कर अंतर्मन से, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥११॥

ॐ ह्रीं सर्व-जीव-रक्षणकराय उत्तमक्षमा धर्मांगाय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

क्षमा श्रेष्ठ संसार में, उत्तम क्षमा महान।
क्षमा धुरंधर को भजें, तजें क्रोध दुर्ध्यान॥

(मोतियादाम)

यहाँ पर जीव अनंत अनंत, सहें दुख रोग सदैव महंत।
तभी निज आतम हो न स्वतंत्र, अतः तज क्रोध क्षमा जयवंत॥१॥
धरें मुनि रूप क्षमा अवतार, करें करुणा जग जीवन सार।
तजें मुनि राग रु द्वेष विकार, सहें उपसर्ग न हो प्रतिकार॥२॥
करें जब कोई क्रिया निज योग्य, कहें उनसे यदि बात अयोग्य।
भलें कर दें तन खंड विखंड, क्षमा धरते मुनि रतन करण्ड॥३॥
करें प्रतिकार न बैर विरोध, रखें समता निज आतम शोध।
अतः बनते जग पालन हार, हुए जित कर्म गये भव पार॥४॥
हमें यह शक्ति मिले जिन नाथ, धरें हम नित्य क्षमा दिन रातद्ध
यही 'मुनिसुव्रत' के अरमान, तजें भव रोग बनें भगवान्॥५॥

(सोरठा)

क्षमा रहा शृंगार, इससे आत्म सजाइये।
तज कर सभी विकार, चिदानंद सुख पाइये॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

क्षमा धर्म उत्तम करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, क्षमा धर्म मुनिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

उत्तम मार्दव धर्म पूजन

स्थापना (दोहा)

मार्दव धर्म महान है, सब रिश्तों का ताज।
हम नमोऽस्तु सादर करें, पाने निज साम्राज्य॥

(जोगीरासा)

जहाँ-जहाँ पर रहे नम्रता, वहाँ कार्य सब होते।
उत्तम मार्दव का पथ पाकर, भक्त कभी ना रोते॥
तन मन की हम तजें कठिनता, मार्दव धर्म मनाये।
हृदय वेदिका पर शासित कर, सम्यक् धर्म सजाएँ॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांग अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्...।(पुष्पांजलिं...)

प्रथम गर्भ फिर जनम मरण तक, तन तो शुद्ध न होते।
लेकिन मानी रत्नत्रय बिन, इसे व्यर्थ ही धोते॥
मन मलिनता यह तज कर के, निज आतम चमकायें।
उत्तम मार्दव धर्म पूजकर, प्रासुक नीर चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

जले मान की ज्वालाओं से, फिर भी भस्म न होते।
किन्तु मान की पीड़ाओं से, रावण जैसे रोते॥

त्याग मान की ज्वालाओं को, शांति सुधा बरसायें।
उत्तम मार्दव धर्म पूजकर, शीतल गंध चढ़ायें।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय संसार ताप विनाशनाय चंदनं...।

मानी अपना मान दिखाने, आडम्बर को जोड़े।
खाये पिए न दान दिए ना, सबका दिल भी तोड़े॥
असारता तज अक्षय बन के, आतम वैभव पाएँ।
उत्तम मार्दव धर्म पूजकर, उज्ज्वल पुंज चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

मानी का संसर्ग प्राप्त कर, फूल तलक मुरझायें।
फिर क्या चेतन बाग खिलेंगे, जब कामी इठलायें॥
अतः काम का वेग त्याग हम, चिदानंद महकायें।
उत्तम मार्दव धर्म पूजकर, प्रासुक पुष्प चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

दो या तीन बार का भोजन, भूख देह की चाहे।
मन तो मरघट जैसा भूखा, भोज्य मान का चाहे॥
मान भोज्य को तजकर कब हम, आतम रस चख पायें।
उत्तम मार्दव धर्म पूजकर, हम नैवेद्य चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

पहन मान का चश्मा प्राणी, हो जाते हैं अंधे।
सभी भलाई खो जाती है, करें स्वार्थ के धंधे॥
अतः मान का चश्मा उतरें, अपनी मंजिल पायें।
उत्तम मार्दव धर्म पूजकर, हम भी दीप जलायें॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

मानी अपना मान दिखाने, जग को धूल चटा दें।
ध्यानी आतम ध्यान लगा के, सारे कर्म जला लें॥
तजकर मान सभी कर्मों को, हम भी धूल चटायें।
उत्तम मार्दव धर्म पूजकर, हम भी धूप जलायें॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

लगे मान के तरुवर पर तो, विषफल महा विनाशी।
मान फलों को खाने वाले, बन न सके संन्यासी॥
सो रत्नत्रय के फल वाले, शिवफल हम चख पायें।
उत्तम मार्दव धर्म पूजकर, फल के गुच्छ चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

मानी का परिवार देख लो, दुख दर्दों को भोगे।
धर्मी का परिवार देख लो, अष्ट द्रव्य सा मोहे॥
अतः मान का दर्द त्याग कर, आत्म सौख्य हम पायें।
उत्तम मार्दव धर्म पूजकर, सादर अर्घ चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्मांगाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रत्येक अर्घ

(विष्णु)

घाति कर्म हर, दोष नष्ट कर, साँचे देव हुये!
तीर्थंकर अर्हन्त देव जो, गुण छियालीस छुये॥
हमसे इनकी अविनय ना हो, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥१॥

ॐ ह्रीं वीतराग अर्हन्तदेव नमनरूप उत्तम मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

श्री अर्हन्त कर्म सब हर के, सिद्ध शुद्ध बनते।
निज रमणी से करे स्वयंकर, हमको तो जमते॥२॥ हमसे इनकी...

ॐ ह्रीं सिद्धदेव नमनरूप उत्तम मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

शिक्षा दीक्षा दंड प्रदाता, गुण छियालीस धरें।
गुरु आचार्य पूज्य परमेष्ठी, हम पर कृपा करें॥३॥ हमसे इनकी...

ॐ ह्रीं आचार्यदेव नमनरूप उत्तम मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

उपाध्याय पच्चीस गुणी हों, दिव्य देशना दे।
पाप रूप अज्ञान नशा के, मुक्ति अँगना दे॥४॥ हमसे इनकी...

ॐ ह्रीं उपाध्याय देव नमनरूप उत्तम मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

भव तन भोगों से विरक्त हो, करें साधनायें।
सर्व साधु जिन धर्म पताका, आत्म तत्त्व ध्यायें॥५॥ हमसे इनकी...

ॐ ह्रीं सर्वसाधुदेव नमनरूप उत्तम मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

वीतराग सर्वज्ञ कथित जो, धर्म कर्म हर्ता।
अनेकांत स्याद्वादमयी वो, आत्म सुखी करता॥
हमसे इनकी अविनय ना हो, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥६॥

ॐ ह्रीं जिनधर्म नमनरूप उत्तम मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

जिनवाणी के शास्त्र ग्रन्थ जो, आगम कहलाते।
द्वादशांग के सूत्र रहे वो, जिनपथ बतलाते॥७॥ हमसे इनकी...

ॐ ह्रीं जिनागम नमनरूप उत्तम मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

नवदेवों के कृात्रिमाकृत्रिम, बिम्ब चैत्य सारे।
तीन लोक के तीन काल के, जग के उजयारे॥८॥ हमसे इनकी...

ॐ ह्रीं जिनचैत्य नमनरूप उत्तम मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

सिद्ध क्षेत्र निर्वाण तीर्थ या, अतिशय क्षेत्र सभी।
चैत्यालय सिद्धालय दाता, हम भी भजें तभी॥९॥ हमसे इनकी...

ॐ ह्रीं जिनचैत्यालय नमनरूप उत्तम मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

जिनायतन के रूप रहे जो, नव देवा साँचे।
यथा योग्य कर विनय उन्हीं की, निज प्रदेश नाँचे॥१०॥ हमसे इनकी...

ॐ ह्रीं जिनशासन नमनरूप उत्तम मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

अहं करें तो अर्हं कैसे, हम बन पाएंगे।
देव शास्त्र गुरु पद में, सादर सो झुक जायेंगे॥

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

नमन बिना अघ हनन ना, नमन बिना ना मोक्ष।
अतः नमन गुणगान कर, पायें आतम सौख्य॥

(शुद्धगीता)

अगर होगी कठिनता तो, तनिक में टूट जायेंगे।
जरा ठोकर लगेगी तो, तुरत ही फूट जायेंगे॥

छुपा लो खूब सम्पत्ति, उसे सब लूट जायेंगे।
लगा लो दौड़ पर पीछे, सभी से छूट जायेंगे॥१॥

अतः त्यागो कठिनताएँ, धर्म होगा शुरू तब ही।
मृदुल नवनीत से बनना, मिले हमको गुरु तब ही॥
विनय करके कठिनतायें, स्वयं ही भाग जायेंगी।
मृदुलतायें निजातम की, स्वयं ही जाग जायेंगी॥२॥

कठिनता रोग जैसी हो, मृदुलता योग जैसी हो।
कठिनता शूल जैसी हो, मृदुलता फूल जैसी हो॥
कठिनता राग जैसी हो, मृदुलता त्याग जैसी हो।
कठिनता मौत जैसी हो, मृदुलता मोक्ष जैसी हो॥३॥

मृदुल बनकर सभी संकट, उपद्रव शांत कर सकते।
सभी उपसर्ग सह सकते, करम को काट भी सकते॥
मृदुल बनना हमें उत्तम, धर्म मार्दव सिखाता है।
शरण इसकी मिले हमको, अतः गुणगान भाता है॥४॥

न अविनय हो किसी की भी, यही है भावना स्वामी।
विनय करने समर्पित हों, यही है साधना स्वामी॥
मिले आश्रय धर्म का बस, यही है याचना स्वामी।
कि सिद्धों सम बनें 'सुव्रत', यही है प्रार्थना स्वामी॥५॥

(सरोठा)

मान दान दे कर्म, अतः तजें अभिमान को।
उत्तम मार्दव धर्म, भज भायें निर्वाण को॥

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

उत्तम मार्दव धर्म दे, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, मार्दवता मुनिराय

(पुष्पांजलिं...)

उत्तम-आर्जव धर्म पूजन

स्थापना (दोहा)

माया ठगनी ने ठगा, यह सारा संसार।
माया ठगने हम करें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(ज्ञानोदय)

मन में कुछ वचनों में कुछ हो, तन से कुछ-कुछ कार्य करें।
यही दगा चल कपट त्याग कर, उत्तम-आर्जव धर्म धरें॥
त्रय योगों को सरल करें तो, सरल राह सिद्धालय की।
अतः रचायें धर्म अर्चना, मिटे वेदना दुख भय की॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांग अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्...।(पुष्पांजलिं...)

(लय—माता तू दया करके....)

अपनों के छल देते, दुख जनम मरण हमको।
छल त्यागे दिए जिनने, वो पाये आतम को॥
छल तजने जल द्वारा, पूजा शुभ वस्तु है।
उत्तम-आर्जव धर्मी, बनने को नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

है शांति कहाँ उनको, जो छल से जल जाते।
वो सदा सुखी रहते, जो सब कुछ सह जाते॥
छल तजने चन्दन से, पूजा शुभ वस्तु है।
उत्तम-आर्जव धर्मी, बनने को नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय संसार ताप विनाशनाय चंदनं...।

जड़ वैभव पाने को, दिन रत दगा देते।
जिसको हम पाप करे, वो हमें जला देते॥
छल तजने अक्षत से, पूजा शुभ वस्तु है।
उत्तम-आर्जव धर्मी, बनने को नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

हों अगणित पाप भलें, पर काम वासना को।
छल-बल के दाव चले, सो भ्रष्ट साधना हों॥

छल तजने पुष्पों से, पूजा शुभ वस्तु है।
उत्तम-आर्जव धर्मी, बनने को नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जैसे तैसे कैसे, कर लाख बहाने हम।
यह भूख मिटाते हैं, सो कहाँ चखे आतम॥
छल तजने नेवज से, पूजा शुभ वस्तु है।
उत्तम-आर्जव धर्मी, बनने को नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

छल में हम अंधे हो, खुद भटकें भटकाते।
यह मोह जाल कैसा, क्यों समझ नहीं पाते॥
छल तजने दीपक से, पूजा शुभ वस्तु है।
उत्तम-आर्जव धर्मी, बनने को नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

हम करें किसी से छल, पर स्वयं छले जाते।
खुद बंधन में पड़ कर, कर्मों के दुख पाते॥
छल तजने धूपों से, पूजा शुभ वस्तु है।
उत्तम-आर्जव धर्मी, बनने को नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

छल के क्या फल होंगे, यदि यह चिंतन करते।
तो मोक्ष महल पाते, क्यों चिंता से मरते॥
छल तजने फल लेकर, पूजा शुभ वस्तु है।
उत्तम-आर्जव धर्मी, बनने को नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

ज्यों छल से कार्य करें, त्यों सारे दोष हुये।
ज्यों छल का त्याग करें, त्यों पूजन योग्य हुये॥
छल तजने अर्घों से, पूजा शुभ वस्तु है।
उत्तम-आर्जव धर्मी, बनने को नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रत्येक अर्घ

(विष्णु)

तन के उजले मन के काले, अगर ठगें जग को।
तो खुद स्वयं ठगे जाते हैं, पाते पशु भव को॥
मन पर जय कर बने मनस्वी, छल त्यागें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय, नमोनमः स्वाहा॥१॥

ॐ ह्रीं मन माया त्याग रूप उत्तम-आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

मुँह में राम बगल में छुर्री, कुटिल नीति जिनकी।
मुख के मीठे मन के झूठे, दुर्गति हों उनकी॥
वचनों के संग्राम त्याग कर, छल त्यागें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥२॥

ॐ ह्रीं वचन माया त्याग रूप उत्तम-आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

मकड़ी जैसे जाल बनाकर, उलझे माया में।
गिरगिट जैसे रंग बदलकर, फँसते काया में॥
मन वच तन को सरल बनाने,छल त्यागें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥३॥

ॐ ह्रीं काया माया त्याग रूप उत्तम-आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

छल प्रपंच खुद ही कर लेना, कृत हम इसे कहें।
बनकर भोले दागे गोले, तो तिर्यंच बनें॥
स्वार्थ त्यागने करें तपस्या, छल त्यागें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥४॥

ॐ ह्रीं कृत माया त्याग रूप उत्तम-आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

अन्य जनों से करवा लेना, छल मायाचारी।
तो वह कारित कहलाती जो, हो अत्याचारी॥
कथनी करनी एक करें हम, छल त्यागें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥५॥

ॐ ह्रीं कारित माया त्याग रूप उत्तम-आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

खुद न करें न पर से करायें, पर पर का छल देख।

मन वचनों से करें प्रशंसा, अनुमोदन यह लेख॥
निज शोधन को अनुमोदन का, छल त्यागें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥६॥

ॐ ह्रीं अनुमोदित माया त्याग रूप उत्तम-आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

छल प्रपंच की पाप योजना, यदि हो चिंतन में।
यह समरम्भ रही माया जो, रमे न चेतन में॥
भाव विकारी तजने हम भी, छल त्यागें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥७॥

ॐ ह्रीं समरम्भ माया त्याग रूप उत्तम-आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पाप योजना के अंतर्गत, सामग्री जोड़ें।
समारंभ माया यह तज के, पाप पंक छोड़ें॥
रखें हाथ पर हाथ साथ में, छल त्यागें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥८॥

ॐ ह्रीं समरम्भ माया त्याग रूप उत्तम-आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

वस्तु जोड़ कर पाप कार्य को, यदि प्रारम्भ करें।
यह आरम्भ नाम की माया, सुख के पंथ हरें॥
सो हम परमानंदी बन के, छल त्यागें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥९॥

ॐ ह्रीं आरम्भ माया त्याग रूप उत्तम-आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

माया का परिणाम बुरा क्यों, माया में उलझो।
अतः त्यागकर छल कपटों को, दुनियाँ से सुलझो॥
यथाजात मुनि जैसे बनने,छल त्यागें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥१०॥

ॐ ह्रीं समस्त विध माया त्याग रूप उत्तम-आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं...।

(पूर्णार्घ्य)

दुनियाँ का यह आडम्बर ही, सबसे बड़ा दगा।
जनम मरण में सभी दिगंबर, साँचा रूप सगा॥
अतः त्याग जग श्रमण रूप धर, छल त्यागें आहा।

ओम् ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

बिना सरलता सुख नहीं, निज में नहीं प्रवेश।
नहीं मोक्ष के पट खुलें, सो छल तजें आशेष॥

(शेर)

जय हो! जय हो! उत्तम-आर्जव धर्म है महान।
इसके बिना न मिल सकेगा मोक्ष का मुकाम॥
उत्तम-आर्जव धर्म हमको नाथ दीजिये।
चेतना का फूल बाग खिला दीजिये॥१॥
जिसमें कीट न कषाय, न हों कर्म के।
न विषैले फूल हों विभाव धर्म के॥
छल कपट न मायाचारी भूल में रहें।
शुद्ध आत्म बनके लोक चूल में रहें॥२॥
कुटिल भव त्यागने को ज्ञान दीजिये।
सरल भाव धरने को ध्यान दीजिये॥
आर्त्त भाव रौद्र भाव मोह भाव को।
त्याग के प्रपंच पंथ पाप भाव को॥३॥
धर्म भाव शुक्ल भाव आत्म भाव दो।
उद्धार हो हमारा नाथ निज स्वभाव दो॥
संकटों में लक्ष्य धर्म से न भ्रष्ट हों।
धर्म पलने सदा कर्तव्य निष्ठ हों॥४॥
लोग हमें दे दगा पर हम न छल करें।
यथाजात मुनि रूप की नकल करें॥
'सुव्रत' का जन्म धन्य बने धर्म शरण में।
जनम मृत्यु हो सो हो, पर गुरु चरण में॥५॥

(सोरठा)

माया के सत्ताईस, भेद तजें दुख कर्म को।
हो नमोऽस्तु नत शीश, उत्तम-आर्जव धर्म को॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आर्जव धर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

उत्तम-आर्जव धर्म दे, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, आर्जवता मुनिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

उत्तम शौच धर्म पूजन

स्थापना (दोहा)

पाने को शुचिता करें, लोभ त्याग का ज्ञान।
शौच धर्म उत्तम भजें, कर नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(ज्ञानोदय)

लोभ त्याग की कठिन साधना, महा पुण्य वाले करते।
तुष्ट पुष्ट संतुष्ट स्वयं हो, निजानंद में रत रहते॥
पूज्य धर्म धर्मात्मा जन ही, शौच धर्म के अधिकारी।
हृदय हमारे आन वसो हम, शुद्ध बने अतिशयकारी॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांग अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्...।(पुष्पांजलिं...)

(पंचचामर/नाराच/तारका)

अनादि से सदैव जन्म, मृत्यु की कथा मिली।
रोग की दवा मिली न, आत्म की व्यथा टली॥
बने निरोग अर्चना, अतः रचायें नीर से।
पवित्र शौच धर्म को, करें नमोऽस्तु भक्ति से॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

न राग द्वेष मोह के, कभी जहाँ धुँआ उठें।
वही सुधर्म छाँव है, चलो चलें वहाँ रुके॥
बने प्रशांत अर्चना, अतः रचायें गंध से।
पवित्र शौच धर्म को, करें नमोऽस्तु भक्ति से॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय संसार ताप विनाशनाय चंदनं...।

अखंड आत्म तत्त्व ये, हुआ विखण्ड खण्ड है।
इसीलिए अनंत धर्म, का छुपा करण्ड है॥
बने अखण्ड अर्चना, अतः रचायें पुंज से।
पवित्र शौच धर्म को करें नमोऽस्तु भक्ति से॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

कुशील काम रोग ने, विभाव से मिला दिया।
सुशील ध्यान योग ने, स्व-पुष्प को खिला दिया॥
बने सुब्रह्म अर्चना, अतः रचायें पुष्प से
पवित्र शौच धर्म को करें नमोऽस्तु भक्ति से॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

गयी न भूख नागिनी, गया न भोग नाग है।
हुई विषाक्त चेतना मिला न ब्रह्म स्वाद है॥
मिले रसात्म अर्चना, अतः रचायें भोज्य से।
पवित्र शौच धर्म को, करें नमोऽस्तु भक्ति से॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

प्रदीप को जलाइये, निहारिये जिनंद को।
निजात्म याद आये तो, नाशयें मोह अंध को॥
मिले निजात्म अर्चना, अतः रचायें दीप से।
पवित्र शौच धर्म को, करें नमोऽस्तु भक्ति से॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

प्रबंध कर्म के किये, न निर्जरा न साधना।
अतः हुई चरित्र की, असाधना विराधना॥

मिले चरित्र अर्चना, अतः रचायें धूप से।
पवित्र शौच धर्म को, करें नमोऽस्तु भक्ति से॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

सरागता असार है, सदैव कष्ट दान दे।
विरागता हि सार है, सदैव आत्म ज्ञान दे॥
मिले स्व-मोक्ष अर्चना, अतः रचायें फल्ल से।
पवित्र शौच धर्म को, करें नमोऽस्तु भक्ति से॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

लोभ ने समाप्त की, पवित्र धर्म भावना।
तभी न भक्त की हुई, अनर्घ रूप प्रार्थना॥
बने अनर्घ अर्चना, अतः रचायें अर्घ से।
पवित्र शौच धर्म को, करें नमोऽस्तु भक्ति से॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रत्येक अर्घ

(विष्णु)

रूखा चिकना हल्का भारी, ठंडा और गरम।
आठ तरह के स्पर्शन सुख, कठोर और नरम॥
इनका लोभ त्यागकर हम भी, शुद्ध बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥१॥

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रिय विषयाकांक्षा रहित उत्तम शौच धर्मांगाय अर्घ्यं...।

खट्टा मीठा खारा चिपरा, कडुआ कसायला।
रसना के षट् रस त्यागे तो, होगा शीघ्र भला॥
जड़ रस का हम लोभ त्याग कर, शुद्ध बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥२॥

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रिय विषयाकांक्षा रहित उत्तम शौच धर्मांगाय अर्घ्यं...।

सुगंध व दुर्गंध नासिका, दो-दो गंध चखे।
बिन चारित्र गंध आतम की, मुक्ति हो ना सके॥

जड़ गंधों का लोभ त्यागकर, शुद्ध बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥३॥

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय विषयाकांक्षा रहित उत्तम शौच धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पाँच रंग के नयन निहारें, निज पर नजर नहीं।
निज पर नजर पड़ी तो इससे, अच्छी खबर यहीं॥
रंग रंगीला लोभ त्यागकर, शुद्ध बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥४॥

ॐ ह्रीं चक्षुरेन्द्रिय विषयाकांक्षा रहित उत्तम शौच धर्मांगाय अर्घ्यं...।

सात सुरी संगीत साधना, हृदय प्रसन्न करे।
पर निज का संगीत न देकर, आतम खिन्न करे॥
सात सुरों का लोभ त्यागकर, शुद्ध बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥५॥

ॐ ह्रीं कणेन्द्रिय विषयाकांक्षा रहित उत्तम शौच धर्मांगाय अर्घ्यं...।

तन मन की जो मनोकामना, निज में मैल भरे।
अगर धरें रत्नत्रय तो ये, शिव की गैल करे॥
तन मन का हम लोभ त्यागकर, शुद्ध बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥६॥

ॐ ह्रीं तन मन विषयाकांक्षा रहित उत्तम शौच धर्मांगाय अर्घ्यं...।

सोना चाँदी हीरा मोती, धन दौलत सारे।
इनके दीवाने कब अपनी, आतम शृंगारे॥
जड़ धन का हम लोभ त्यागकर, शुद्ध बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥७॥

ॐ ह्रीं धन विषयाकांक्षा रहित उत्तम शौच धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पुत्र मित्र पत्नी भाई या, कुटुंब के लोभी।
इनकी माया में फँसते तो, बन न सके योगी॥
कुटुंब का यह लोभ त्यागकर, शुद्ध बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥८॥

ॐ ह्रीं कुटुंब विषयाकांक्षा रहित उत्तम शौच धर्मांगाय अर्घ्यं...।

काम देव नारायण चक्री, इत्यादिक पद के।
लोभी और लालची जन ही, भव-भव में भटके॥
पद सम्पद का लोभ त्यागकर, शुद्ध बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥९॥

ॐ ह्रीं पद विषयाकांक्षा रहित उत्तम शौच धर्मांगाय अर्घ्यं...।

सागर-सागर वर्षों के सुख, सुर अहमिंद्रों के।
नहीं चाहिए पर भव के सुख, लखो जिनेन्द्रों के॥
राग भोग का लोभ त्यागकर, शुद्ध बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥१०॥

ॐ ह्रीं देव सुख विषयाकांक्षा रहित उत्तम शौच धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

लोभी छली लालची जन से, हो न सके भक्ति।
विषय भोग आकांक्षा तज के, शीघ्र हुई मुक्ति॥
रत्नत्रय चेतन के लोभी, शुद्ध बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

लोभ बराबर दुख नहीं, सुख ना शौच समान।
अतः लोभ तज शौच के, हम गायें गुणगान॥

(नरेंद्र/जोगीरासा)

जय हो। जय हो। शौच धर्म की, लोभ त्याग कर पाओ।
लोभी कंजूसों को अपना, कभी न मित्र बनाओ॥
इनकी दूरी बहुत जरूरी, रखो न इनसे नाते।
जो इनका आदर्श बनाते, वे रोते पछताते॥१॥
ज्ञानी ध्यानी गुणी तपस्वी, अगर हो गए लोभी।
तो फिर मान प्रतिष्ठा खोकर, हँसी जगत में होगी॥
जोड़ जोड़ कर द्रव्य अचेतन, होंगे इतने भारी।

धर्म ध्यान में मन न लगेगा, हो दुर्बुद्धि हमारी॥२॥
पर द्रव्यों की आसक्ति से, रत्नत्रय न टिकेगा।
शौच धर्म जब नहीं पले तो, चेतन नहीं दिखेगा॥
शुद्ध चेतना हो न सके सो, दुर्गतियों को छानो।
लोभ त्याग कर हों संतोषी, बात धर्म की मानो॥३॥
भरा तराजू का पल्ला ज्यों, नीचे ही रह जाता।
ऐसे ही तो लोभी जग की, लातों में आ जाता॥
लोभ पाप का बाप बखाना, अतः लोभ को मारो।
संग त्याग सत्संग धार कर, तन मन को शृंगारो॥४॥
तज आडम्बर बनो दिगंबर, त्यागो सारी मूर्छा।
शुद्ध चेतना अपनी करने, जल्दी लो मुनि दीक्षा॥
तब ही उत्तम शौच धर्म से, रत्नत्रय चमकेंगे।
निज चेतन के रतन खजाने, सिद्धों सम दमकेंगे॥५॥
तजें कर्म फल कर्म चेतना, ज्ञान चेतना पाने।
हम भी उत्तम शौच धर्म के, आये हैं गुण गाने॥
इससे वातावरण शुद्ध हो, तन मन शुचिता पायें।
इसलिए तो 'सुव्रतसागर', शौच धर्म गुण गायें॥६॥

(सोरठा)

वह घूमे संसार, लोभ चक्र जिस पर चले।
करें लोभ परिहार, शौच धर्म से हों भले॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

शौच धर्म उत्तम करे, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, शौच धर्म मुनिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

उत्तम सत्य धर्म पूजन

स्थापना (दोहा)

सत्य समान न धर्म है, सत्य समान न ज्ञान।
पूजें उत्तम सत्य हम, कर नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(शम्भु)

जय सत्य धर्म! जय सत्य धर्म!, जय सत्य धर्म की नित गूँजे।
त्रय लोकों में त्रय कालों में, बिन सत्य धर्म कुछ ना सूझे॥
है सत्य समान न सुख जग में, सो सत्य धर्म दुनियाँ पूजें।
हम हृदय कमल पर शासित कर, सुख रूप सत्य आतम खोजें॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांग अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्...।(पुष्पांजलिं...)

हम सत्य खोजने भटक रहे, पर सत्य कहीं भी नहीं मिला।
बस जन्म मृत्यु के सिंधु मिले, सो तैर सके ना पार मिला।
अब जन्म मृत्यु का जल तैरें, दो हमें सत्य नैया स्वामी।
हम उत्तम सत्य धर्म पूजें, हो करके नमोऽस्तु निज ज्ञानी॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

हो जहाँ असत्य वहाँ निश्चित, कुछ वैर-विवाद-विरोध पले।
संताप मिले सुख शांति नहीं, कैसे आतम का शोध चले॥
अब तपें सत्य सम महक उठें, दो हमें सत्य चन्दन स्वामी।
हम उत्तम सत्य धर्म पूजें, हो करके नमोऽस्तु निज ज्ञानी॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय संसार ताप विनाशनाय चंदनं...।

हो परेशान यह सत्य भले, पर कभी पराजित हो न सके।
उपसर्ग कष्ट संकट के बिन, सत्यातम अक्षय हो न सके॥
अब साधक सत्य समान बनें, दो हमें सत्य अक्षत स्वामी।
हम उत्तम सत्य धर्म पूजें, हो करके नमोऽस्तु निज ज्ञानी॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

नित सैर सपाटे झूठ करे, पर मिले सत्य पथ पर काँटे।
इन काँटों में वो फूल खिलें, जो निज खुशबू घट-घट बाटे॥

अब सत्य शिवं सुन्दर बनने, दो हमें सत्य पुष्पक स्वामी।
हम उत्तम सत्य धर्म पूजें, हो करके नमोऽस्तु निज ज्ञानी।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

यदि सत्य स्वाद विष सा कड़वा, तो उसको संत खोजते क्यों।
क्यों भोजन पानी रस तज के, उसमें दिन रात डूबते क्यों।
अब सत्यानंदी बनने को, दो हमें सत्य नेवज स्वामी।
हम उत्तम सत्य धर्म पूजें, हो करके नमोऽस्तु निज ज्ञानी ।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

है सत्य सत्य हीरे जैसा, जो मिट न सके वह काँच नहीं।
नित सत्यमेव-जयते कहते, आ सके सत्य को आँच नहीं॥
जो सत्य बनाये यथाजात, दो सत्य ज्ञान दीपक स्वामी।
हम उत्तम सत्य धर्म पूजें, हो करके नमोऽस्तु निज ज्ञानी॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

जो सच्चा व्यक्ति होता है, वह ना तो आस्तिक होता है।
वह ना ही नास्तिक होता है, वह तो बस वास्तविक होता है॥
जो वास्तविकता का परिचय दे, वह सत्य धूप दे दो स्वामी।
हम उत्तम सत्य धर्म पूजें, हो करके नमोऽस्तु निज ज्ञानी॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

वैराग्य धरा पर खिलते हैं, नित रत्नत्रय उपवन प्यारे।
हों सत्य धाम के वृक्ष जहाँ, लगते हैं ध्यान गुच्छ न्यारे॥
जो मोक्ष महा फल का रस दे, वह सत्य बगीचा दो स्वामी।
हम उत्तम सत्य धर्म पूजें, हो करके नमोऽस्तु निज ज्ञानी॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

विश्वास सत्य पर आज नहीं, पर सत्य भीड़ से अलग दिखे।
है बहुत वस्तुएँ बिकने को, पर सबसे मँहगा सत्य बिके॥
जग खोटे सिक्के जैसा है, दो सत्य अर्घ शाश्वत स्वामी।
हम उत्तम सत्य धर्म पूजें, हो करके नमोऽस्तु निज ज्ञानी॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रत्येक अर्घ

(विष्णु)

ज्यों चावल के देश-देश में, अलग नाम रहते।
कहीं भात तो कहीं भक्त तो, कहीं कूल कहते॥
यह जनपद या देश सत्य जो, दे आतम आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥१॥

ॐ ह्रीं जनपद (देश) सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

बहुत जनों के द्वारा जिसको, माना जाता हो।
परम्परा में लोक रूढ़ि में, जो आ जाता हो॥
संवृति सम्मत सत्य इसी से, जगत पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥२॥

ॐ ह्रीं संवृति सम्मत सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पदार्थ के ना होने पर जो, कुछ निक्षेप करें।
ज्यों अर्हन्तों के बिम्बों को, हम अर्हन्त कहें॥
स्थापना वह सत्य कराता, स्थापना आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥३॥

ॐ ह्रीं स्थापना सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

गुण बिन नाम रखो यों जिससे, हो जायें सब काम।
काम करो यों जो हो जाये, जग में अपना नाम॥
नाम सत्य यह सिद्ध धाम से, मिलवाता आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥४॥

ॐ ह्रीं नाम सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

नीले पीले आदिक सातों, रंग रूप प्यारे।
देख देख कर यूँ लगता, ज्यों असली हों न्यारे॥
रूप सत्य निज रूप सँभाले, निरुपम कर आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥५॥

ॐ ह्रीं रूप सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

ये है ज्ञानी, ये है मूरख, बड़ा और छोटा।

जिसे अन्य की तुलना करके, कुछ बोला होता॥
यही अपेक्षा सत्य तत्त्व की, दे प्रतीति आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥६॥

ॐ ह्रीं अपेक्षा (प्रतीति) सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

चलें पिसाने को आटा या, भात पकाते हैं।
आटा पिसे न भात पके, पर सत्य कहाते हैं॥
यह व्यवहार सत्य हम को दे, मुक्ति द्वार आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥७॥

ॐ ह्रीं व्यवहार सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

जितनी रही योग्यता उतना, काम न कर पाते।
जैसे इन्द्र पलट दें जग को, किन्तु न पलटाते॥
ये तो सम्भावना सत्य जो, साहस दे आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥८॥

ॐ ह्रीं सम्भावना सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

योग्य अयोग्य वचन हों लेकिन, आशय अच्छा हो।
जिससे पले अहिंसा आदिक, तो वह सच्चा हो॥
भाव समझना भाव सत्य है, स्वभाव दे आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥९॥

ॐ ह्रीं भाव सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

किसी वस्तु की तुलना करके, जो समझाते हैं।
जैसे पल्योपम सागर से, आयु बताते हैं॥
उपमा सत्य यही है इससे, अनुपम हो आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥१०॥

ॐ ह्रीं उपमा सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

क्रोध रहित भय लोभ रहित हो, हास्य रहित जो हो।
हित-मित-प्रिय आगम आज्ञा से, बँधा सत्य जो हो॥
सभी तरह के सत्य भजें हों, सत्य रूप आहा।

ओम् ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥

ओम् ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

सत्य झूठ के खेल में, झूठ गया पाताल।
सत्य विराजे मोक्ष में, अतः कहें जयमाला॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! सत्य धर्म की, जय हो! जय हो! सतपथ की।
सत्य धर्म के अनुयायी की, जय हो। जय हो निजहित की॥
तीन लोक में तीन काल में, सत्य बिना कल्याण नहीं।
फिर भी सत्य नहीं पालों तो, हो सकता निर्वाण नहीं॥१॥
सो निर्वाण चाहने वाले, जूठ झूठ से दूर रहें।
झूठ मार्ग पर जीवन जीने, कभी नहीं मजबूर रहें॥
क्योंकि सत्य तो सदा-सदा से, बिन आडम्बर रहता है।
तभी सत्य का खोजी साधक, नग्न दिगंबर रहता है॥२॥
बिना आवरण झूठ न रहता, बिना सहारे चल न सके।
खोटे सिक्के के जैसा यह, बिना सत्य के मिल न सके॥
किन्तु सत्य तो सूर्य अहिंसा, बिना आवरण रहता है।
खुद भी चले चलाए जग को, यथाजात नित रहता है॥३॥
अतः सत्य का दर्शन करने, अब ना पलटो ग्रंथों को।
देश विदेशों में क्या जाना, क्या जाना जग तीर्थों को॥
केवल केवल एक बार बस, जैन दिगंबर संतों के।
साँचे दर्शन कर आओ तो, दर्शन होंगे सत्यों के॥४॥
दुनियाँ के हर रिश्तों की बस, दो सच्चाई होती हैं।
दफनाना या देह जलाना, जिससे आतम रोती हैं॥
अतः मरण के पहले-पहले, केवल सत्य समझ लेना।
'सुव्रत' उत्तम सत्य पूजकर, शुद्धातम को वर लेना॥५॥

(सोरठा)

सर्वोत्तम है सत्य, अतः सत्य को पूजिये।
पाकर आतम तत्त्व, मोक्ष महल को खोजिये॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

उत्तम सत्य धर्म दे, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, सत्य धर्म मुनिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

उत्तम संयम धर्म पूजन

स्थापना (दोहा)

संयम बिन इस जगत में, हो न सके कुछ काम।
सो उत्तम संयम भजें, कर नमोऽस्तु अविराम॥

(शिखरिणी/महावीराष्टक)

अनंतों जीवों के, अगर दुख को दूर करना।
विकारी भावों को, हरण करके मोक्ष वरना॥
उसी का रास्ता है, जिनवर कहें संयम धरो।
नहीं तो श्रद्धा से, श्रमण जिनकी पूजन करो॥

(सोरठा)

प्राणी संयम धार, इंद्री संयम हम भजें।
करने निज शृंगार, आह्वान करके सजें॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांग अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्...।(पुष्पांजलिं...)

(गीतिका)

जन्म मृत्यु की भँवर से, चेतना कब पार हो।
दूर हों दुख कष्ट सबके, कब सुखी संसार हो॥
नाव संयम की अतः ले, जा मिलें निज मुक्ति से।

पूजते संयम धरम हम, कर नमोऽस्तु भक्ति से॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

क्रोध की ज्वालामुखी को मान ने ईंधन दिया।
किन्तु संयम धारियों ने, चेतना कुंदन किया॥
छाँव संयम की मिले सो, जा मिलें हम मुक्ति से।
पूजते संयम धरम हम, कर नमोऽस्तु भक्ति से॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय संसार ताप विनाशनाय चंदनं...।

भोग विषयों की ललक में, मूल्य संयम का घटा।
क्या संयमी रत्नत्रयी, क्या स्व-निधि किसको पता॥
रूप संयम अक्षयी धर, जा मिलें हम मुक्ति से।
पूजते संयम धरम हम, कर नमोऽस्तु भक्ति से॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

काम की दुख वेदना ने, चेतनायें भ्रष्ट कीं।
किन्तु संयम साधकों ने, साधनायें शिष्ट कीं॥
पुष्प संयम का खिला के, जा मिलें हम मुक्ति से।
पूजते संयम धरम हम, कर नमोऽस्तु भक्ति से॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

इस क्षुधा की पूर्ति को, हम लिप्त पापों में हुये।
किन्तु छुटकारा न पाया, आत्म रस को ना छुये॥
भोज्य संयम से करें सो, जा मिलें हम मुक्ति से।
पूजते संयम धरम हम, कर नमोऽस्तु भक्ति से॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

दीप अगणित हम जलाकर, बाह्य को रोशन करें।
दीप से ये दीप जलकर, रोशनी निज में भरें॥
दीप संयम का जलाकर, जा मिलें हम मुक्ति से।
पूजते संयम धरम हम, कर नमोऽस्तु भक्ति से॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

विश्व संयम के बिना यह, जाल कर्मों के बुने।
आप बनता आप फँसता, मार्ग सुख का न चुने॥
धार संयम कर्म काँटे, जा मिलें हम मुक्ति से।
पूजते संयम धरम हम, कर नमोऽस्तु भक्ति से॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

संयमी संयम सिखा के, मोह के फल नाशते।
स्वस्थ करके चेतना को, मोक्ष के फल बाँटते॥
प्राप्त कर संयम स्वरस अब, जा मिलें हम मुक्ति से।
पूजते संयम धरम हम, कर नमोऽस्तु भक्ति से॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

विश्व को हर संपदायें, देख संयम को झुकीं।
मूल्य संयम का चुकाना, विश्व के बस का नहीं॥
कीमती संयम अरघ पा, जा मिले हम मुक्ति से।
पूजते संयम धरम हम, कर नमोऽस्तु भक्ति से॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रत्येक अर्घ

सोना चाँदी अर्घ चढ़ाने, मिट्टी या पत्थर।
ये सब पृथ्वीकायिक प्राणी, दुख पाते मरकर॥
पृथ्वीकायिक मरें ना हमसे, सुखी रहें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥१॥

ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिक जीव रक्षण रूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

नदी सरोवर सागर के जल, बर्फ ओस बादल।
ये जल कायिक अपने द्वारा, पाते दुख दलदल॥
सब जलकायिक मरें ना हमसे, सुखी रहें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥२॥

ॐ ह्रीं जल कायिक जीव रक्षण रूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

नहीं जलाना नहीं बुझाना, दीप आग बिजली।
मरे अग्निकायिक इससे तो, करुणा नहीं पली॥

अग्निकायिक मरे ना हमसे, सुखी रहें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥३॥

ॐ ह्रीं अग्निकायिक जीव रक्षण रूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पंखा कूलर ए. सी. आदिक, पवनकाय होते।
साँसों तक के लेने में भी, प्राण तलक खोते॥
वायुकायिक मरें ना हमसे, सुखी रहें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥४॥

ॐ ह्रीं वायुकायिक जीव रक्षण रूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

फूल फलों पत्तों आदिक के, खेत बगीचे वन।
हरियाली को छूने तक में, ये खोते जीवन॥
वनस्पतिकायिक मरें ना हमसे, सुखी रहें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥५॥

ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिक जीव रक्षण रूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

इल्ली आदिक जो दो इंद्री, तथा तीन इंद्री।
मक्खी आदिक चउ इंद्री जो, ये हैं विकलेन्द्री॥
ये विकलत्रय मरें ना हमसे, सुखी रहें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥६॥

ॐ ह्रीं विकलत्रय जीव रक्षण रूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पंचेन्द्री प्राणी होते हैं, संज्ञी मन वाले।
मन से रहित असंज्ञी दोनों, चारों गति वाले॥
जल-थल-नभ चर मरें ना हमसे, सुखी रहें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥७॥

ॐ ह्रीं संज्ञी-असंज्ञी पंचेंद्रिय जीव रक्षण रूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

परसन रसना घ्राण चक्षु वा, कर्णों के विषयी।
विषयों के आसक्त मुक्त ना, होते ना विजयी॥
पंचेन्द्री के बनें जितेन्द्री, सुखी रहें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥८॥

ॐ ह्रीं पंचेंद्रिय विषय त्याग रूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पंचेन्द्री के विषय क्षेत्र सब, सीमित ही रहते।
पर मन के तो रहे असीमित, राग-द्वेष करते॥
मन के विषय विजेता बनकर, सुखी रहें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥९॥

ॐ ह्रीं मनो विषय त्याग रूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

सामायिक छेदोपस्थापना, परिहार विशुद्धि।
सूक्ष्मसाम्प्राय यथाख्यात ये, दे आतम शुद्धि॥
त्याग असंयम धर कर संयम, सुखी रहें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥१०॥

ॐ ह्रीं पंचविध संयम रूप संयम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

पाप दुखों से बचकर प्यारे, अगर मुक्ति चाहो।
तो कुटुंब से पूछताछ कर, संयम स्वीकारो॥
बनकर मुनि अर्हंत सिद्ध सब, सुखी रहें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वामिति।

जयमाला

(दोहा)

महिमा संयम भाव की, अतिशय अपरंपार।
जयमाला गाकर करें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(मात्रिक सवैया)

इस दुनियाँ के सारे प्राणी, दुख कष्टों से हैं भयभीत।
सदा-सदा सुख शांति चाहते, चाहें आतम का संगीत॥
उड़ धन का साम्राज्य प्राप्त कर, निज निधि का खोजें भंडार।
मान प्रतिष्ठा पूजा चाहें, जग में चाहें जय-जयकार॥१॥
किन्तु जरा सा यह तो सोचो, कि यह कैसे हो आसान।
जग के सारे वैभव पाकर, बन जायें हम सब भगवान॥
जो पथ अर्हन्तों सिद्धों ने, अपनाकर पाया शिव-देश।

जिसके देव-शास्त्र-गुरुओं ने, दिए देशना में उपदेश॥२॥
जिस बिन भले रहें तीर्थंकर, लेकिन पा न सके निर्वाण।
फिर किसकी हम बात कहें क्या, कैसे कर पायें कल्याण॥
अतः वही पथ हम खोजें जो, मोक्ष महल के खोले द्वार।
वह है संयम, उत्तम संयम, जो करता आतम उद्धार॥३॥
प्राणी संयम इंद्री संयम, इसके दो-दो रहे प्रकार।
पृथ्वी जल अग्नि वायु तरु, पंच स्थावर पालन हार॥
पंचेन्द्री की रक्षा करके, पाँच तरह का संयम धार।
नग्न दिगम्बर रत्नत्रय ले, अपनी शुद्धातम शृंगार॥४॥
संयम ऐसी रही औषधि, जो तन मन के हरे विकार।
स्वस्थ मस्त सुख शांति प्रदाता, हर सपने कर दे साकार॥
और कहे क्या इसकी महिमा, देव स्वयं करते सत्कार।
मुक्तिवधु खुद करे स्वयंवर, दुनियाँ करती जय जयकार॥५॥
आज विश्व में जो ताण्डव हैं, उनसे बचना मुश्किल काम।
पर जिनशासन का दावा है, संयम कर दे सब आसान॥
अतः विश्व का मंगल करने, आज रहा संयम अनिवार्य।
सो 'मुनिसुव्रत' संयम धर कर, विश्वशांति का करते कार्य॥६॥

(सोरठा)

त्याग असंयम भाव, हम तुम संयम धार लें।
पायें आत्म स्वभाव, खुद को दुख से तार लें॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

संयम धर स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, संयम धर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

उत्तम तप धर्म पूजन

स्थापना (दोहा)

इच्छाएँ आकाश सम, अंनत दुख भंडार।
जय करने तप धर्म को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शम्भु)

ज्यों आग निखारे सोने को, ज्यों आग पकाये भोजन को।
ज्यों आग संभाले दुनियां को, ज्यों आग चलाये जीवन को॥
त्यों आग धर्म का परिचय दे, जो उत्तम तप कहलाता है।
इस तप से कर्म निर्जरा हो, जो शुद्धातम प्रकटाता है॥

(सोरठा)

रत्नत्रय को धार, ज्ञान चेतना जानने।
तपो धनों के द्वार, हम आये तप पूजने॥

ॐ ह्रीं उत्तम तपो धर्मांग अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्...।(पुष्पांजलिं...)

(बसंततिलका)

जो जन्म मृत्यु दुख को समझे समस्या।
वो शीघ्र पार करने करते तपस्या॥
तो खोजते जल लिए तप धर्म वस्तु।
सो पूजते विनय से करके नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं उत्तम तपो धर्मांगाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

ज्यों शूल तो निकलते बस शूल द्वारा।
त्यों विश्व ताप नशते तप धर्म द्वारा॥
हो प्राप्त चन्दन तपोत्तम धर्म वस्तु।
सो पूजते विनय से करके नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं उत्तम तपो धर्मांगाय संसार ताप विनाशनाय चंदनं...।

संसार में सतत मात्र असारता है।
अध्यात्म ही शरण अक्षय शाश्वता है॥
हो प्राप्त अक्षय तपोत्तम धर्म वस्तु।

सो पूजते विनय से करके नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं उत्तम तपो धर्मांगाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

चैतन्य तो महकता नित पुष्प जैसा।
जो काम से क्षत विदीर्ण विरूप जैसा।
दो काम नाशक तपोत्तम धर्म वस्तु
सो पूजते विनय से करके नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं उत्तम तपो धर्मांगाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कैसे सहें हम क्षुधा दुख वेदनायें।
ये धर्म के बिन कभी मिटने न पायें॥
दो भोग चेतन तपोत्तम धर्म वस्तु।
सो पूजते विनय से करके नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं उत्तम तपो धर्मांगाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

छाया सभी तरफ तो दुख का अँधेरा।
दीखे न धर्म बिन आतम का सबेरा॥
दो ज्ञान दीपक तपोत्तम धर्म वस्तु।
सो पूजते विनय से करके नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं उत्तम तपो धर्मांगाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

ये कर्म जाल मनमोहक हों लुभायें।
प्राणी फँसाकर सदा दुख दे रुलायें॥
दो कर्म भेदक तपोत्तम धर्म वस्तु।
सो पूजते विनय से करके नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं उत्तम तपो धर्मांगाय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

वो पाप बीज फल भौतिक भोग चाहें।
होते न संभव अतः दुख दर्द पायें॥
दो पाप नाशक तपोत्तम धर्म वस्तु।
सो पूजते विनय से करके नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं उत्तम तपो धर्मांगाय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

क्या द्रव्य के जगत में जड़ मोल होते।
श्रद्धालु सौंपकर ये अनमोल होते॥
पायें चिदातम तपोत्तम धर्म वस्तु।
सो पूजते विनय से करके नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं उत्तम तपो धर्मांगाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रत्येक अर्घ

(विष्णु)

जग में सारभूत संयम है, संयम में तप हैं।
तप होते बारह प्रकार के, जो देते सुख हैं॥
सुख के इच्छुक बनें तपस्वी, कटें कर्म आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥१॥

ॐ ह्रीं द्वादश विध तपोत्तम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

छह प्रकार के बाह्य तपों में, पहला है अनशन।
चारों विध का भोजन तजकर, करो भजन चिंतन॥
ज्ञानामृत के रसिया पायें, निज चेतन आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥२॥

ॐ ह्रीं अनशन बाह्यतपोत्तम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

कर्मक्षपण जिनगुणसम्पति, मुक्तावलि आदि।
सिंहनिष्क्रीडन केवल सुदर्शन, सर्वतोभद्र आदि।
तरह-तरह अनशन कर पायें, शुद्धातम आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥३॥

ॐ ह्रीं बहुविध अनशन बाह्यतपोत्तम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

ऊनोदर में निजी भूख से, कम करना भोजन।
व्रत्तिपरिसंख्यान तपों में, विधि पूर्वक भोजन॥
षट्रस त्याग अशन को करके, सिद्ध बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥४॥

ॐ ह्रीं अवमौदर्य व्रत्तिपरिसंख्यान रसपरित्यागादि बहुविध बाह्यतपोत्तम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

शून्य धाम में रहना सोना, विविक्त शय्यासन।
कायक्लेश में सुख सुविधायें, तजकर करो भजन॥
कर्म निर्जरा के ये साधन, मुक्त करें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥५॥

ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासन कायक्लेशादि बहुविध बाह्यतपोत्तम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

निज दोषों को शोधन करने, प्रायश्चित्त करें।
देव-शास्त्र-गुरु नव देवों की, हम भी विनय करें॥
वैयावृत्य करें मुनियों की, करके तप आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥६॥

ॐ ह्रीं प्रायश्चित्त विनय वैयावृत्यादि बहुविध अंतरंग तपोत्तम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

ग्रन्थ वाचना तत्त्व पृच्छना, शुद्धघोष आम्नाय।
करें मनन चिंतन अनुप्रेक्षा, उपदेशक स्वाध्याय॥
ज्ञानाभ्यास करें आलस तज, ज्ञानी हों आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥७॥

ॐ ह्रीं स्वाध्याय अंतरंग तपोत्तम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

अहंकार ममकार त्यागकर, तन को अचल करें।
बाहुबली सम ध्यान लगाकर, जीवन सफल करें॥
सम्यक् तप व्युत्सर्ग ठानकर, निज सुख हों आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥८॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग अंतरंग तपोत्तम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

वचन रोककर देह अचल कर, मन एकाग्र करें।
आर्त्त-रौद्र तज धर्म-शुक्ल कर, आतम शुद्ध करें।
ध्यानातीत अवस्था पाने, ध्यान धरें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥९॥

ॐ ह्रीं ध्यान अंतरंग तपोत्तम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

तप से करके कर्म निर्जरा, ऋद्धि-सिद्धि होती।
इच्छाओं का निरोध करके, आत्म सिद्धि होती॥
तप कल्याणक करके हम भी, सुखी बनें आहा।

ओम् ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥१०॥

ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धि-साधनरूप तपोत्तम धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

तप के बिन इस जग में कोई, भाव न शुद्ध हुआ।
तप के बिन फिर किसका चेतन, परम विशुद्ध हुआ॥
अतः करें सम्यक् तप हम भी, शुद्ध बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तपो धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

तप से जग के काम हों, तप से हो निर्वाण।
सो उत्तम तप पूजने, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! तपो धर्म की, जो धर्मों का सार रहा।
कर्मों की जो करे निर्जरा, जग का पालनहार रहा॥
इच्छाओं का रहा निरोधक, साधक का शृंगार रहा।
देव इन्द्र भी जिसको तरसें, मोक्ष महल का द्वार रहा॥१॥
तप नैया है तीर तिरैया, भव-जल पार लगाती है।
तप चन्दन का तिलक लगाकर, आत्म शांति हो जाती है॥
तप अक्षत दे मान प्रतिष्ठा, दे चैतन्य चिदातम को।
तप के पुष्प काम दुख हरके, महकाये परमातम को॥२॥
तप नैवेद्य जहाँ निर्मित हो, वहाँ क्षुधा का रोग नशे।
तप दीपक की देख रोशनी, मोह अंध का राज्य नशे॥
तप की धूप तपस्वी खेकर, कर्मों की दुर्गन्ध हरें।
तप तरुवर है कल्पवृक्ष सम, महा मोक्षफल दान करें॥३॥
तप के अर्घ चढ़ाके हमको, मोक्ष पहाड़ी चढ़ना है।
तप का महा अर्घ्य अर्पित कर, हमें महात्मा बनना है॥
तप की जयमाला गाकर के, मुक्तिवधू को वरना है।

तप का शांति विसर्जन करके, आत्म शांति को करना है॥४॥
लेकिन हम यह भूल न जायें, उत्तम तप गुण कहलाता।
गुण तो गुणी बिना ना रहते, सो गुणियों से हो नाता॥
तप गुण है तो गुणी तपस्वी, अतः तपस्वी बिन पूजें।
तप की पूजा पूर्ण न होगी, अतः तपस्वी हम पूजें॥५॥
तप ही अतिशय सिद्ध क्षेत्र है, तप ही तीर्थंकर स्वामी।
तप ही साधन सिद्ध शिला है, तप ही धर्म ज्ञान ज्ञानी॥
तप ही है संसार अवस्था, तप ही मोक्ष महालय है।
तप ही 'सुव्रत' के 'विद्या' गुरु, तप से होती जय-जय हो॥६॥

(सोरठा)

उत्तम तप हम धार, भव सागर से पार हों।
अतः किया सत्कार, आतम के उद्धार हों॥

ॐ ह्रीं उत्तम तपो धर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

महा तपस्वी तप करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, तप तपसी मुनिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

उत्तम त्याग धर्म पूजन

स्थापना (दोहा)

तारण तरण जहाज है, त्याग धर्म की नाँव।
नमोऽस्तु उत्तम त्याग को, पाने धार्मिक छाँव॥

(गीतिका)

त्याग बिन क्या कार्य होते, त्याग बिन क्या मोक्ष हो।
त्याग बिन आनंद कैसे, त्याग बिन बस क्षोभ हो॥
इसलिए जग त्याग करके, धर्म से अनुराग हो।

कर नमोऽस्तु पूजते हम, त्यागियों के त्याग को॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांग अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्...।(पुष्पांजलिं...)

कामनाएँ पूर्ण करने, चेतना भव-भव चले।
वीतरागी की शरण बिन, चक्र दुख का ना टले॥
जन्म मृत्यु दुख हरण को, साधु करते त्याग हैं।
पूज उत्तम त्याग हम भी, चाहते वैराग्य हैं॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

कामनाओं की ललक में, चेतनाएँ जल रहीं।
जल सकी ना कामना पर, वेदनाएँ पल रहीं॥
भव भवों का ताप हरने, साधु करते त्याग हैं।
पूज उत्तम त्याग हम भी, चाहते वैराग्य हैं॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय संसार ताप विनाशनाय चंदनं...।

कामनाओं के लुटेरे, चेतनाएँ लूटते।
साधना के सैनिकों को, देख छक्के छूटते॥
संपदा अक्षय मिले सो, साधु करते त्याग हैं।
पूज उत्तम त्याग हम भी, चाहते वैराग्य हैं॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

कामना के फूल पै तो, मुग्ध कामी हो रहे।
कर्म के जब जेल हों सो, भव्य प्राणी रो रहे॥
मुक्तिरानी प्राप्त करने, साधु करते त्याग हैं।
पूज उत्तम त्याग हम भी, चाहते वैराग्य हैं॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कामना के व्यंजनों में, रस नहीं चैतन्य का।
लोलुपी विषयान्ध होकर, मानते आनंद सा॥
चेतना के हों रसिक सो, साधु करते त्याग हैं।
पूज उत्तम त्याग हम भी, चाहते वैराग्य हैं॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

कामनाओं की चमक में, चेतनाएँ गुम रही हैं।
साधनों से साधनायें, गलत ही पथ चुन रही हैं॥
चेतना की किरण पाने, साधु करते त्याग हैं।
पूज उत्तम त्याग हम भी, चाहते वैराग्य हैं॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

कामना के युद्ध में तो, चेतना की हार हो।
शृंखलाएँ कर्म की पा, दासता स्वीकार हो॥
कर्म पर पाने विजय श्री, साधु करते त्याग हैं।
पूज उत्तम त्याग हम भी, चाहते वैराग्य हैं॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

कामना के तरु मनोहर, पर विषैले फल लगे।
प्राणियों को इष्ट हैं सो, चेतना निष्फल लगे॥
पुद्गलों का त्यागने रस, साधु करते त्याग हैं।
पूज उत्तम त्याग हम भी, चाहते वैराग्य हैं॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

कामना जब जाल फेंके, तो उलझती आत्मा है।
किन्तु उत्तम त्याग हो तो, झलकती परमात्मा है।
चेतना का अर्घ्य पाने, साधु करते त्याग हैं।
पूज उत्तम त्याग हम भी, चाहते वैराग्य हैं॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रत्येक अर्घ

(विष्णु)

कामदेव जैसे सुन्दर तन, पुद्गल से बनते।
भोगी इससे राग करें पर, योगी तप करते॥
बने विदेही हम भी इसका, मोह तजें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥१॥

ॐ ह्रीं देह-मूर्छा-त्यागरूप उत्तम त्याग धर्मांगाय अर्घ्यं...।

जग में माँ के उपकारों को, किसने वाँचा है।

फिर भी माँ का राग त्यागना, करतब साँचा है॥
कर्ज दूध का चुका सकें सो, राग तजें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥२॥

ॐ ह्रीं जननी-मूर्छा-त्यागरूप उत्तम त्याग धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पिता तुल्य इस जग में अपना, कौन हितैषी हो।
फिर भी इनसे राग न उनको, जो जिन भेषी हो॥
परम पिता परमात्मा बनने, नेह तजें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥३॥

ॐ ह्रीं पितृ-मूर्छा-त्यागरूप उत्तम त्याग धर्मांगाय अर्घ्यं...।

मात-पिता का दिल का टुकड़ा, आँखों का तारा।
बेटा ही तो हमें जलायें, ये है संसारा॥
कौन साथ दे अतः पुत्र का, राग तजें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥४॥

ॐ ह्रीं पुत्र-मूर्छा-त्यागरूप उत्तम त्याग धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पिछले भव जब ब्रह्मचर्य की, पुण्य साधना हो।
तो नारी सुख श्रेष्ठ जगत सुख, मिले चेतना को॥
शिवपुर वाली पाने त्यागे, घरवाली आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥५॥

ॐ ह्रीं पत्नी-मूर्छा-त्यागरूप उत्तम त्याग धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पुण्य योग से घर परिवारा, मिलते सहभागी।
इनके त्यागी मुक्त हुए हैं, दुखी हुए रागी॥
सिद्धों का कुल पाने हम भी, घर त्यागें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥६॥

ॐ ह्रीं कुटुंब-मूर्छा-त्यागरूप उत्तम त्याग धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पुण्योदय से राज्य प्राप्त कर, राजा बन बैठे।
सिंहासन शासन सत्ता पा, पापी बन बैठे॥
राज्य मोह तज मोक्ष राज्य को, हम पाएँ आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥७॥

ॐ ह्रीं राज्य-मूर्छा-त्यागरूप उत्तम त्याग धर्मांगाय अर्घ्यं...।

हीरा मोती सोना चाँदी, वैभव जड़ धन के।
हाथी घोड़ा वाहन आदिक, साधन चेतन के॥
पर आसक्ति क्या दे मुक्ति, सो त्यागें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥८॥

ॐ ह्रीं धन-वाहनादिक-मूर्छा-त्यागरूप उत्तम त्याग धर्मांगाय अर्घ्यं...।

साँकल कसे देह को जैसे, कषाय आतम को।
चौरासी के भ्रमण कराके, दुख देते हमको॥
सो कषाय का शमन करें हम, हों स्वतंत्र आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥९॥

ॐ ह्रीं कषाय-मूर्छा-त्यागरूप उत्तम त्याग धर्मांगाय अर्घ्यं...।

राग द्वेष का मोह भाव का, जग विस्तार रहा।
आतम का स्वरूप हो मैला, दुख का द्वार कहा॥
तजें मोह को राग-द्वेष को, उज्ज्वल हों आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥१०॥

ॐ ह्रीं मोह-राग-द्वेष-मूर्छा-त्यागरूप उत्तम त्याग धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

जड़ चेतन भोगोपभोग के, निज पर द्रव्य सभी।
ये ही राग-द्वेष भव दुख दें, ना दें शांति कभी॥
सो मुमुक्षुक शांति के इच्छुक, पर त्यागें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

त्याग बिना इस विश्व में, बने न कोई काम।
सो हम उत्तम त्याग भज, चाहें मोक्ष मुकाम॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! त्याग धर्म की, जय हो! उत्तम त्यागी की।
जय हो! जय हो! वीतराग की, जय हो! निज के रागी की॥

निज का रागी कौन बना है, कौन वीतरागी होता।
कौन बना है उत्तम त्यागी, कौन बना रागी रोता॥१॥
आओ! इन तथ्यों पर चिंतन, करके सम्यक कर्म करें।
क्या है अपना और पराया, जानें समझें धर्म धरें॥
संत महंतों ने जो छोड़ा, मुर्दों का जो छूट गया।
उसी परिग्रह के चक्कर से, भाग्य सभी का फूट गया॥२॥
सकल परिग्रह जिसने त्यागा, वह पूजित मुनिराज बने।
जड़ से चेतन अलग किया तो, मुक्तिवधू का ताज बने॥
अतः समझ लो त्याग धर्म को, जो सांसारिक सुख देता।
सांसारिक की बात कहें क्या, चेतन का भी सुख देता॥३॥
अतः प्रथम मित्थ्यात्व त्यागकर, तजो वेदना अव्रत की।
अणुव्रत धार महाव्रत धारो, करो साधना सुव्रत की॥
तजो भीतरी परिग्रह चौदह, दस भी त्यागो अंदर के।
राग-द्वेष की छाया त्यागो, पद रख लो निज मंदिर के॥४॥
पाप त्याग कर पुण्य कमा लो, मूर्छा तजने शिक्षा लो।
वैभाविक परिणति को तजने, नग्न दिगंबर दीक्षा लो॥
चढ़कर त्याग धर्म की नैया, डूबो ना भवसागर में।
'सुव्रतसागर' बनकर डूबो, 'विद्या' के सुख सागर में॥५॥

(सोरठा)

धर्म शिरोमणि त्याग, उत्तम है संसार में।
करके निज से राग, कर नमोऽस्तु जिन द्वार में॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

होवे उत्तम त्याग से, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, त्यागोत्तम मुनिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

उत्तम आकिंचन्य धर्म पूजन

(दोहा)

सकल परिग्रह त्याग कर, बनकर मुनि निर्ग्रन्थ।
भजकर आकिंचन्य हम,धर्म करें जयवंत॥

मदिरा (सम)

काल अनादि व्यतीत हुआ पर, चेतन का जड़ साथ न छूटा।
आत्म स्वरूप न प्राप्त हुआ बस, पुद्गल ने अपना धन लूटा॥
नग्न दिगंबर संत बने बिन, आतम हो कब एक अकेला।
किंचत मात्र न हो चित पावन, सो हम धर्म भजें बन चेला॥

(दोहा)

उत्तम अकिंचन्य को, भक्त हृदय में धार।
सविनय पूजा हम करें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आकिंचन्य धर्मांग अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्...।(पुष्पांजलिं...)

(शम्भु)

माँ बाबुल दोनों में जन्मा, अर्थी में चार लगे कंधे।
फिर भी भव यात्रा एकाकी, अध्यात्म बिना हम हैं अंधे॥
भव चक्रव्यूह को तजने अब, निज एकाकी एकत्व भजें।
सो आकिंचन्य धर्म पूजें, ले प्रासुक नीर नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

धन अर्जन में संताप हुआ, दिन रात विसर्जन में जलते।
कर संरक्षण बस ताप मिला, दुख से बस हाथ रहे मलते॥
भव विषयों का संताप तजें, अध्यात्म छाँव के धाम रहें।
सो आकिंचन्य धर्म पूजें, दे चन्दन धार नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय संसार ताप विनाशनाय चंदनं...।

जो संत महंतों ने छोड़ा, या जो मुर्दों का छूट गया।
वह पद यश वैभव पाने में, अपना अपने से रूठ गया॥
यह क्षणभंगुर जग जाल तजें, बस अक्षय आतम प्राप्त करें।

सो आकिंचन्य धर्म पूजें, ले अक्षत पुंज नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

कब कौन नीम के फूलों से, कहिये अपना शृंगार करें।
फिर जड़ के शृंगारों में क्यों, बहुमूल्य चेतना व्यर्थ करें॥
यह देह प्रदर्शन त्याग सकें, बस निज का निज शृंगार करें।
सो आकिंचन्य धर्म पूजें, ले प्रासुक पुष्प नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

हम जड़ में आतम रस चाहें, सो जड़ रस में आसक्त हुए।
मुनि आत्म रसिक के अभिलाषी, सो निज रस में अनुरक्त हुए॥
पर भोग वासना त्याग सकें, निज में निज का रस पान करें।
सो आकिंचन्य धर्म पूजें, लेकर नैवेद्य नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

जो जड़ से झिलमिल रहता है, उस जगत महल में हम भटकें।
जग चकाचौंध के त्यागी जन, चैतन्य महल में नित चमकें॥
वह हमें मिले चैतन्य किरण निज आतम को अवलोक सकें।
सो आकिंचन्य धर्म पूजें, हम लेकर दीप नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

हम धूल उड़ायें दुनियाँ की, पर कर्म धूल से उड़ बैठे।
सो कर्म धूल जो उड़ा रहे, उन मुनियों से हम जुड़ बैठे॥
निष्कर्म चेतना से जुड़कर, हम अष्ट कर्म को धूल करें।
सो आकिंचन्य धर्म पूजें, हम खेकर धूप नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

जब हुआ शुभोदय भोग मिले, तो भूल गये हम चेतन को।
सो पापोदय में उलझे अब, क्या पाएँ मोक्ष निकेतन को॥
अब त्याग शुभाशुभ शुद्ध बने, यों पूजा का फल प्राप्त करें।
सो आकिंचन्य धर्म पूजें, फल करके भेंट नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

सुख शांति प्राप्त करने हमने, जड़ का अम्बार लगा डाला।
ना सुखी हुए ना शांति मिली, चेतन अनमोल गवाँ डाला॥
संकल्प विकल्प परिग्रह के, हम तज कर निज में लीन रहें।
सो आकिंचन्य धर्म पूजें, अर्पित कर अर्घ नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रत्येक अर्घ

(विष्णु)

खेत भवन खलिहान आदि में, राग द्वेष होते।
हिंसा कर्म इन्हीं के त्यागी, पाप कर्म धोते॥
क्षेत्र वास्तु बहिरंग संग तज, नग्न बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥१॥

ॐ ह्रीं क्षेत्र-वास्तु रूप बाह्यपरिग्रह रहित उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

सोना चाँदी के रागी का, बस रोना धोना।
सोना चाँदी तज के देखो, आतम हो सोना॥
हिरण्य सुवर्ण बहिरंग संग तज, नग्न बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥२॥

ॐ ह्रीं हिरण्य-सुवर्ण रूप बाह्यपरिग्रह रहित उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

गाय गजादिक पशु तो धन है, गेहूँ आदिक धान्य।
इनमें जो भी उलझ गए वे, बन न सके जग मान्य॥
धन धान्य बहिरंग संग तज, नग्न बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥३॥

ॐ ह्रीं धन धान्य रूप बाह्यपरिग्रह रहित उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

नौकर चाकर दास-दासियाँ, आज्ञाकारी हों।
इनकी सेवा भोग भोग हम कब अनगारी हों॥
दास दासी बहिरंग संग तज, नग्न बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥४॥

ॐ ह्रीं दास-दासी रूप बाह्यपरिग्रह रहित उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

बर्तन कपड़े के त्यागी के, किससे झगड़े हों।

मिर्च मसालों के त्यागी के, चेतन तगड़े हों॥
कुप्य-भांड बहिरंग संग तज, नग्न बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥५॥

ॐ ह्रीं कुप्य-भांड रूप बाह्यपरिग्रह रहित उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

है मिथ्यात्व हमारा शत्रु, सारे कर्म करे।
भव-भव में दुख दे तड़पाये, आतम रूप हरे॥
अंतरंग मिथ्यात्व संग तज, नग्न बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥६॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व रूप अंतरंग परिग्रह रहित उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

स्त्री-पुरुष-नपुंसक तीनों, वेद राग दुख दें।
वेदतीत अवस्था पाने, संयम धर झुक लें॥
अंतरंग संग वेद-राग तज, नग्न बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥७॥

ॐ ह्रीं वेद-राग रूप अंतरंग परिग्रह रहित उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

हास्य-अरति-रति-शोक-ग्लानि-भय, ये षट्दोष तजें।
धीर वीर गंभीर गुणों से, आतम रूप भजें॥
अंतरंग षट् दोष संग तज, नग्न बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥८॥

ॐ ह्रीं हास्यादिक षट्दोष रूप अंतरंग परिग्रह रहित उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

क्रोध-मान-माया-कषाय, या क्रोध भाव छोड़ें।
परमातम से नाता जोड़ें, कर्म कड़ी तोड़ें॥
अंतरंग कषाय संग तज, नग्न बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥९॥

ॐ ह्रीं चतु-कषाय रूप अंतरंग परिग्रह रहित उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पर पदार्थ के जड़ चेतन के, योग तथा उपभोग।
इन्हें त्यागना ज्ञान भाव है, जो दे निज का भोग॥
अंतरंग बहिरंग संग तज, नग्न बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥१०॥

ॐ ह्रीं पर-पदार्थ रूप अंतरंग-बहिरंग परिग्रह रहित उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

ज्ञानावर्णादिक कर्मों की, आसक्ति मूर्छा।
है परिग्रह सो कर्म त्यागने, ले लो मुनि दीक्षा॥
विविध विकारी रूप संग तज, नग्न बनें आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥११॥

ॐ ह्रीं विविध रूप परिग्रह रहित उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

अगर दिगंबर बने भाग्य से, तब तो राग छुए।
बने दिगंबर संयम से तो, आकिंचन्य हुए॥
फिर सम्राट बने आतम के, मुक्त हुए आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम-आकिंचन्य धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

आतम आकिंचन्य है, फिर क्यों ग्रंथि ग्रन्थ।
तजकर ग्रंथि ग्रन्थ को, पूजें हम निर्ग्रन्थ॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! आकिंचन्य धर्म की, जय हो संत दिगंबर की।
जय हो! जिनशासन के ध्वज की, जय हो नग्न निरंबर की।
यह दुनियाँ तो सिमट रही है, बस मुट्ठी भर पुद्गल में।
किन्तु यहाँ कुछ ऐसे भी हैं, जो न फँसे जड़ जंगल में॥१॥
क्योंकि उन्होंने जान लिया है, जन्में मरें अकेले हम।
कर्म अकेले ही हम करते, सुख दुख सहें अकेले हम॥
फिर क्यों तन धन अपने माने, जब ये साथ न देते हैं।
ना ये अपने ना इनके हम, यों निश्चय कर लेते हैं॥२॥
फिर जग के झगड़े या कपड़े, इनसे मूर्छा क्यों करना।
सो एकत्व भावना भाकर, जो है सो है में रमना॥
पर के कर्ता भोक्ता स्वामी, हमें कभी ना बनना है।
पर की तू-तू मैं-मैं तजकर, शीघ्र दिगंबर बनना है॥३॥

क्योंकि दिगंबर बने बिना तो, होगा आकिंचन्य नहीं।
आकिंचन्य बने बिन आतम, हो न सकेगा धन्य कहीं॥
जन्म मरण में रहे दिगंबर, फिर क्यों आडम्बर जोड़ें।
अतः त्याग आसक्ति इच्छा, लेकर दीक्षा जग छोड़ें॥४॥
उत्तम आकिंचन्य रूप को, दुनियाँ शीश झुकाती है।
और कहें क्या मुक्तिवधू खुद, वरमाला ले आती है॥
जिसके आगे दुख संकट तक, नत मस्तक तक हो जाएँ।
सो 'सुव्रत' आसक्ति त्याग के, आकिंचन्य धर्म ध्यायें॥५॥

(सोरठा)

भजते आकिंचन्य, तजें परिग्रह कर्म हम।
जड़ चेतन कर भिन्न, भोगें निज सुख धर्म हम॥

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

उत्तम आकिंचन्य दे, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, आकिंचन्य मुनिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पूजन

स्थापना (दोहा)

शील शिरोमणि धर्म है, ब्रह्मचर्य व्रत राज।
परम ब्रह्म प्रभु को भजें, करके नमोऽस्तु आज॥

(जोगीरासा)

काम भाव आसक्ति वासना, त्यागे सब वैरागी।
सभी तरह की नारी तज के, मुक्तिवधू के रागी॥
आत्म ब्रह्म में रमण करें हों, पाप रमण के त्यागी।
ब्रह्मचर्य का धर्म भजें हम, बनें तत्त्व अनुरागी॥

(दोहा)

परम ब्रह्म परमात्म को, देकर उच्च स्थान।
सकल पाप को त्यागने, हम करते आह्वान॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांग अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्...।(पुष्पांजलिं...)

काम वेग के गंदे जल में, डूबे संसारी ही।
जनम-मरण की सहें वेदना, बचें ब्रह्मचारी जी॥
दसलक्षण के गंधोदक से, काम कथा हम धो लें।
ब्रह्मचर्य को जल अर्पित कर, सादर नमोऽस्तु बोलें।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

काम ताप में दुनियाँ झुलसे, आत्मकली मुरझाये।
धर्म छाँव ना मिल पाए सो, तड़प-तड़प दुख पाये॥
दसलक्षण का तिलक लगा कर, हृदय सुगंधी घोलें।
ब्रह्मचर्य को चन्दन सौंपें, सादर नमोऽस्तु बोलें॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय संसार ताप विनाशनाय चंदनं...।

काम कुठार चलाकर सबको, क्षत विक्षत कर जाता।
तोड़-तोड़ कर देह पींजड़ा, हमको खूब रुलाता॥
दसलक्षण का आश्रय पाकर, निज को निज सम तौलें।
ब्रह्मचर्य को पुंज चढ़ा कर, सादर नमोऽस्तु बोलें।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

काम बाण से सब घायल हैं, लाज धर्म धन खोयें।
हाय! हाय! फिर हुई जेल सों, आकुल-व्याकुल रोयें॥
दसलक्षण की आई बहारें, आतम कलियाँ खोलें।
ब्रह्मचर्य को पुंज चढ़ा कर, सादर नमोऽस्तु बोलें।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

काम कामना की पूर्ति को, भूखे प्यासे दौड़े।
ऊँच नीच को भुला-भुला कर, मर्यादा सब तोड़े॥
दसलक्षण के मिश्री जैसे, भोजन के रस ले लें।

ब्रह्मचर्य नैवेद्य चढ़ाकर, सादर नमोऽस्तु बोलें॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

काम कालिमा अंधियारे ने, चुरा लिए चित् मोती।
लुटे-पिटे से घूम रहे हम, जल न सकी चित्-ज्योति॥
दसलक्षण की आरती करके, यहाँ वहाँ ना डोलें।
ब्रह्मचर्य के दीप जलाकर, सादर नमोऽस्तु बोलें॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अष्टकर्म दहनाय दीपं...।

काम सुगंधी की आँधी से, बिखर रहा जग सारा।
आतमराम हुआ गंदला सा, बेवस है बेचारा॥
दसलक्षण के होम हवन कर, कर्मधूल को धो लें।
ब्रह्मचर्य को धूप चढ़ाकर, सादर नमोऽस्तु बोलें॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

काम भूमि में हमने अपने, बीज पुण्य के बोये।
दुख की फसल काटकर फिर हम, विष फल खाकर रोये॥
दसलक्षण की फसल उगाने, बीज धर्म के वो लें।
ब्रह्मचर्य को फल अर्पित कर, सादर नमोऽस्तु बोलें॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

काम जाल में उलझ उलझ हम, गवाँ चुके निज पूँजी।
बने दरिद्री दर-दर भटके, मिली न सुख की कुंजी॥
दसलक्षण की सीढ़ी चढ़कर, द्वार मुक्ति के खोलें।
ब्रह्मचर्य को अर्घ चढ़ाकर, सादर नमोऽस्तु बोलें॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रत्येक अर्घ्य

नारी राग बढ़ाने वाली, कथा न सुनना है।
हर नारी में माँ बेटी का, दर्शन करना है॥
स्त्री राग कथा श्रमण तज, ब्रह्म मिले आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥१॥

ॐ ह्रीं स्त्रीराग-कथाश्रवण त्यागरूप उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

नारी जन के अंग मनोहर, नहीं निहारें रे।
मुक्तिवधू को पाने अपनी, आत्म निखारें रे॥
तज तन्मनोहरांग निरीक्षण, ब्रह्म मिले आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥२॥

ॐ ह्रीं तन्मनोहरांग निरीक्षण त्यागरूप उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

भोगे भोग असंयम में जो, उन्हें न याद करें।
आगे भी वो याद न आयें, यही प्रयास करें॥
पूर्वरतानुस्मरण भोग तज, ब्रह्म मिले आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥३॥

ॐ ह्रीं पूर्वरतानुस्मरण त्यागरूप उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

मन को रुचिकर इष्ट भोज्य है, वृष रस है भारी।
फिर भी तो भर पेट न खाते, पूज्य ब्रह्मचारी॥
वृषेष्ट रस को त्यागें जिससे, ब्रह्म मिले आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥४॥

ॐ ह्रीं वर्षेष्ठ रस त्यागरूप उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

अपनी देह सजाना त्यागे, पर से मोह नहीं।
अपनी आतम जो शृंगारें, साँचा ब्रह्म वही॥
स्व-शरीर संस्कार त्यागकर, ब्रह्म मिले आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥५॥

ॐ ह्रीं स्व-शरीर संस्कार त्यागरूप उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

काम बढ़ाने वाली बातें, काम कथा होती।
इनको करके सुन के दुनियाँ, लाज धर्म खोती॥
काम-कथा तर्ज धर्म-कथा से, ब्रह्म मिले आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥६॥

ॐ ह्रीं काम-कथा त्यागरूप उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

भोग तथा उपभोग रूप जो, नारी की वस्तु।
अरे! ब्रह्मचारी जी उसको, छूना कभी ना तू॥
नवधा शील पालकर प्यारे, ब्रह्म मिले आहा।

ओम् ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥७॥

ॐ ह्रीं नवधा शीलमय भोगोपभोग त्यागरूप उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

शोषण वशीकरण उच्चाटन, मोहन व संताप।
पंच प्रकार काम दुख त्यागे, तो ही छूटे पाप॥
काम रूप संसर्ग त्यागकर, ब्रह्म मिले आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥८॥

ॐ ह्रीं पंच प्रकार काम-बाण त्यागरूप उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

काम बाण के दस वेगों से, कामी मर जाते।,
किन्तु ब्रह्मचारी ये त्यागें, मुक्ति धाम पाते॥
वेग त्याग संवेग धारकर, ब्रह्म मिले आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥९॥

ॐ ह्रीं काम-वेग त्यागरूप उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

सभी तरह के काम त्याग कर, हम निष्काम बनें।
शील अठारह हजार धारकर, हम भगवान बनें॥
जन्म-जन्म की पीड़ा तजकर, ब्रह्म मिले आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥१०॥

ॐ ह्रीं अष्टादश-सहस्त्र शीलरूप उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अर्घ्यं...।

(पूर्णार्घ्य)

इस दुनियाँ से उस अम्बर तक, जो-जो पाप हुए।
उनमें प्रायः कामेन्द्री से, दुख संताप हुए॥
शील स्वभाव प्राप्त कर हमको, ब्रह्म मिले आहा।
ओम् ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

ब्रह्मचर्य व्रत पूजकर, कटे कर्म की मार।
जयमाला गाकर खुले, मोक्ष महल का द्वार॥

(ज्ञानोदय)

इस दुनियाँ में ब्रह्मचर्य के, मूल्य सदा ही उच्च रहे।
अगर नहीं है ब्रह्मचर्य तो, अन्य धर्म सब निम्न रहे॥
ब्रह्मचर्य तो एक अंक सा, अन्य शून्य जैसे होते।
बिना अंक के अंकगणित में, अपना मूल्य शून्य खोते॥१॥
इसीलिए तो कहा गया है, ज्वाला में जलना अच्छा।
पर्वत से गिरना भी अच्छा, साँप पकड़ना भी अच्छा॥
विष खाकर मर जाना अच्छा, शूली पर चढ़ना अच्छा।
किन्तु शील का दाग बुरा है, शीलवान साधक सच्चा॥२॥
शीलवान सच्चे साधक ही, करें सुरक्षा धर्मों की।
लाज बचायें शान बढ़ायें, करें हानियाँ कर्मों की॥
सीता जी के शील धर्म से, रावण तक तो झुक बैठा।
अग्निकुंड भी कमल सरोवर, शील धर्म से बन बैठा॥३॥
शील धर्म से द्रोपदी रानी, जग में खूब प्रसिद्ध हुई।
शील धर्म से नीली देवी, दोष जीत कर स्वर्ग गई॥
शील धर्म से सोमा जी का, सुनो साँप मणि हार हुआ।
शील धर्म से सेठ सुदर्शन, सिद्धों का दरवार छुआ॥४॥
सिद्धों के दरवार छुयें हम, ऐसे भाव हमारे हैं।
अतः शील की महिमा गा के, हम जीवन शृंगारे हैं॥
शील झील में नाव चलाकर, निज को पार उतारेंगे।
शील धर्म से 'सुव्रतसागर' निज का रूप निखारेंगे॥५॥

(दोहा)

तजकर इन्द्रिय भोग हम, पायें चेतन भोग।
अतः पाप संयोग तज, हो नमोऽस्तु के योग॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

ब्रह्मचर्य उत्तम करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, ब्रह्मचर्य मुनिराय॥
(पुष्पांजलिं...)

महासमुच्चय जयमाला

(दोहा)

धर्म करे संसार सुख, धर्म करे निर्वाण।
धर्म पंथ को साध कर, होता है कल्याण॥

(चौपाई)

धर्म रहा सबका हितकारी, धर्म रहा सबका उपकारी।
धर्म दान दे मोक्ष सवारी, अतः धर्म को नमोऽस्तु हमारी॥१॥
सबसे बड़ा धर्म भंडारा, धर्म नाँव ने जग को तारा।
धर्म रतन ने निज शृंगारा, अतः धर्म हमने स्वीकारा॥२॥
उत्तम क्षमा क्रोध को जीते, क्षमा धुरंधर सुख रस पीते।
उत्तम मार्दव विनय सिखाये, मार्ग दिखाकर गले लगाए॥३॥
उत्तम-आर्जव भ्रमण मिटाये, निज से निज का मिलन कराये।
उत्तम शौच मैल सब हरता, रूप स्वरूप निखारा करता॥४॥
उत्तम सत्य धरे जो प्राणी, निज पर के बनते कल्याणी।
उत्तम संयम जो स्वीकारे, उसके होते वारे-न्यारे॥५॥
उत्तम तप हर कर्म जलाये, चेतन महल सदा चमकाए।
उत्तम त्याग हमारा साथी, मुक्तिवधू का है बाराती॥६॥
उत्तम आकिंचन्य निराला, निज परिणति में रमने वाला।
उत्तम ब्रह्मचर्य है साँचा, जिसका यश इस जग में वाँचा॥७॥
वस्तु स्वभाव धर्म कहलाता, इससे है हम सब का नाता।
धर्म खेल है न बच्चों का, जुटे न दम अच्छे-अच्छों का॥८॥
अतः जुटाओ साहस प्यारे, दसलक्षण से जी न चुरा रे।
'सुव्रत' इसको झट अपना रे, रोग शोक दुख कर्म नशा रे॥९॥

(सोरठा)

दसलक्षण की जाप, पाप हरे सुख शांति दे।
करके नमोऽस्तु आप, शीघ्र मिले निज मुक्ति से॥

ओम् ह्रीं उत्तम क्षमा-मार्दव-आर्जव-शौच-सत्य-संयम-तप-त्याग-आकिंचन्य-ब्रह्मचर्य रूप दसलक्षण धर्मेभ्यो महासमुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

दशलक्षण स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, दसलक्षण मुनिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

प्रशस्ति

नगर करैरा में हुआ, वेदी प्रतिष्ठा का काम।
तब दसलक्षण पर्व का, पूरा हुआ विधान॥
दो हजार अठारह रवि, छह मई शुभ तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥
गुरु मुनि दीक्षा का हुआ, पचासवाँ त्यौहार।
गुरु सेवा में भेंट तब, छोटा सा उपहार॥

॥ इति॥